सत्था न खो गहपति! एसा इदानेव मक्खिका मारेस्सामीति मातरं घातेसि पुब्बेपि घातेसि येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि। तदा माता येव माता अहोसि, धीता येव धीता, महासेट्ठी पन अहमेव अहोसिंति।

रोहिणीजातकं

●

६. आरामदूसकजातकं

न वे अनत्थकुसलेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्ञतरस्मिं कोसलगामके उय्यानदूसकं आरब्भ कथेसि।

पच्चुपन्नवत्थु

सत्था किर कोसलेसु चारिकं चरमानो अञ्ञतरं गामकं सम्पापुणि। तत्थेको कुटुम्बिको तथागतं निमन्तेत्वा अत्तनो उय्याने निसीदापेत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स दानं दत्वा–भन्ते! यथारुचिया इमस्मिं उय्याने विचरथाति आह।

भिक्खू उट्ठाय उय्यानपालं गहेत्वा उय्याने विचरन्ता एकं अंगणट्ठानं दिस्वा उय्यानपालं पुच्छिंसु उपासक! इमं उय्यानं अञ्ञत्थ सन्दच्छायं इमस्मिं पन ठाने कोचि रुक्खो वा गच्छो वा नत्थि, किन्तु खो कारणंति ?

भन्ते! इमस्स उय्यानस्स रोपनकाले एको गामदारको उदकं सिञ्चिन्तो इमस्मिं ठाने रुक्खपोतके उम्मूलं कत्वा मूलप्पमाणेन उदकं सिञ्चि। ते रुक्खपोतका मिलायित्वा मता। इमिना कारणेन इदं ठानं अंगणं जातन्ति। भिक्खू सत्थारं उपसंकमित्वा एतमत्थं आरोचेसुं। सत्था न भिक्खवे! सो गामदारको इदानेव आरामदूसको पुब्बेपि आरामदूसको येवाति वत्वा अतीतं आहरि–

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बाराणसियं नक्खत्तं घोसयिंसु। नक्खत्तभेरिसद्दसवणकालतो पट्ठाय

शास्ता ने, 'गृहपति! इसने न केवल इस समय 'मक्खियों को मारूँगी' (सोच), माता को मार डाला है, पहले भी मारा था'–यह धर्मदेशना दे परिणाम संघटित कर, जातक का सारांश प्रस्तुत किया। उस समय, माता ही माता थी, लड़की ही लड़की, और महाश्रेष्ठी तो मैं ही था।

रोहिणी जातक

●

४६. आरामदूसक जातक

'न वे अनत्थकुसलेनाति....', यह गाथा, शास्ता कोसल (देश) स्थित एक लघु ग्रामस्थ उद्यान दूषित करने वाले के विषय में कही।

क. वर्तमान कथा

शास्ता कोसल में विचरते हुए एक अन्य छोटे गाँव में पहुँचे। वहाँ एक गृहस्थ ने भगवान् को निमन्त्रित कर, अपने उद्यान में बैठा, बुद्ध-सहित, भिक्षु-संघ को (भोजन-) दान दे–'भन्ते! इस उद्यान में यथारुचि विहार करें,' कहा।

भिक्षुओं ने उठकर, माली (उद्यान पाल) को (साथ) ले, उद्यान में घूमते हुए आँगन-समान एक स्थान को देख उससे पूछा–'उपासक! इस उद्यान में सर्वत्र तो घनी छाया है, लेकिन इस स्थान पर वृक्ष अथवा गाछ नहीं है, इसका क्या कारण है ?'

"भन्ते ! यह बाग लगाते समय, एक गँवार लड़का पानी सींचते हुए, यहाँ के पौधों को उखाड़-उखाड़ कर उनकी जड़ों में परिमाणानुसार पानी सींचता था। अतः वह पौधे कुम्हला कर नष्ट हो गये। इस कारण यह उद्यान आँगन (सा) हो गया।"

भिक्षुओं ने शास्ता के पास पहुँचकर, यह बात कही। शास्ता ने, "भिक्षुओं ! न केवल इस समय यह गँवार लड़का उपवन-दूषक है, पहले भी वह उद्यान-दूषक था" कह, पूर्व-जन्म की कथा कही–

सकलनगरवासिनो नक्खत्तनिस्सितका हुत्वा विचरन्ति। तदा रञ्ञो उय्याने बहू मक्कटा वसन्ति। उय्यानपालो चिन्तेसि-नगरे नक्खत्तं घुट्ठं। इमे वानरे उदकं सिञ्चथाति वत्वा अहं नक्खत्तं कीळिस्सामीति जेट्ठकवानरं उपसंकमित्वा-सम्म वानरजेट्ठक! इमं उय्यानं तुम्हाकम्पि बहूपकारं, तुम्हे एत्थ पुप्फफलपल्लवानि खादथ। नगरे नक्खत्तं घुट्ठं, अहं नक्खत्तं कीळिस्सामि। यावाहं न आगच्छामि ताव इमस्मिं उय्याने रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चितुं सक्खिस्सथाति पुच्छि। साधु सिञ्चिस्सामीति।

तेनहि अप्पमत्ता होथाति उदकं सिञ्चनत्थाय तेसं चम्मकूटे चेव दारुकूटे च दत्वा गतो।

वानरा चम्मकूटे चेव दारुकूटे च गहेत्वा रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चन्ति। अथ ने वानरजेट्ठको एवमाह भो वानरा! उदकं नाम रक्खितब्बं, तुम्हे रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चन्ता उप्पाटेत्वा उप्पाटेत्वा मूलं ओलोकेत्वा गम्भीरगतेसु मूलेसु बहुं उदकं सिञ्चथ, अगम्भीरगतेसु अप्पं। पच्छा अम्हाकं उदकं दुल्लभं भविस्सतीति।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा तथा अकंसु। तस्मिं समये एको पण्डितपुरिसो राजुय्याने ते वानरे तथा करोन्ते दिस्वा एवमाह -भो वानरा! कस्मा तुम्हे रुक्खपोतके उप्पाटेत्वा उप्पाटेत्वा मूलप्पमाणेन उदकं सिञ्चथाति ? ते एवं नो वानरजेट्ठको ओवदतीति आहंसु। सो तं वचनं सुत्वा-अहो वत भो! बाला अपण्डिता अत्थं करिस्सामाति अनत्थमेव करोन्तीति चिन्तेत्वा इमं गाथमाह-

न वे अनत्थकुसलेन, अत्थचरिया सुखावहा। हापेति अत्थं दुम्मेधो, कपि आरामिको यथाति ।।

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में वाराणसी-नरेश (राजा) ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय, (वाराणसी में) उत्सव (नक्षत्र) की घोषणा की गयी। उत्सव-भेरी-शब्द सुनने के पश्चात्, सभी नगर निवासी उत्सव-अनुरूप होकर घूमने लगे। उस समय राज-उपवन में बहुत से बन्दर रहते थे। माली (उपवनपाल) ने सोचा-"नगर में उत्सव की घोषणा हुई है, इन वानरों को 'पानी सींचो' कह, मैं उत्सव में क्रीडा करूँगा'। उसने ज्येष्ठ वानर के पास जा-'सौम्य वानरराज! यह उद्यान तुम्हारे लिए बड़ा हितकारी है, तुम इसके फल-फूल-पत्ते खाते हो। नगर में उत्सव उद्घोषित हुआ है, मैं उत्सव में आनन्द लेने जाना चाहता हूँ। जब तक मैं लौट कर नहीं आता, तब तक तुम इस उद्यान के पौधों में पानी सीच सकते हो ?' पूछा। 'अच्छा! सीचेंगे।'

'तो आलस्य-रहित रहना", (कह) वह (उन्हें) पानी सींचने के लिए चर्म-सेचक (चमड़े का थैला) और लकड़ी के वर्तन देकर चला गया। चरसा और लकड़ी के बर्तन लेकर वानर पौधों में पानी सींचने लगे। वानरों के सरदार ने उन्हें कहा-'वानरों! जल रक्षणीय है। तुम पौधों में पानी सींचते समय (उन्हें) उखाड़-उखाड़कर, (उनकी) जड़ें देख, गहरी जड़ वाले पौधों में अधिक पानी कम गहरी (जड़) वालों में थोड़ा सींचो। पश्चात् हमें पानी मिलना दुर्लभ हो जायगा।'

उन्होंने 'अच्छा' कह स्वीकार कर, तदनुसार (सरदार के निर्देशानुसार) ही किया। उस समय एक बुद्धिमान् (व्यक्ति) ने उन वानरों को राजोद्यान में यह करते देख, इस प्रकार-'वानरों! तुम किस लिए पौधों को उखाड़-उखाड़, उनकी जड़ (की गहराई) के अनुसार पानी सींच रहे हो ?'

उन्होंने-'हमारे सरदार ने हमें, ऐसा ही करने के लिए कहा है, उत्तर दिया। उसने उन (वानरों) की बात सुन, 'अहो! मूर्ख (लोग) उपकार करने की इच्छा से अपकार ही करते हैं' (सोच) यह गाथा कही-

उपकार करने में अचतुर (मूर्ख) आदमी का उपकार (अर्थ) करना भी सुखदायक नहीं होता। माली के बन्दर की भाँति, मूर्ख व्यक्ति, कार्य की हानि ही करता है।

तत्थ वेति निपातमत्तं। **अनत्थकुसलेनाति** अनत्थे अनायतने कुसलेन अत्थे आयतने करणे अकुसलेन चाति अत्थो। **अत्थचरियाति** वड्ढिकिरिया। **सुखावहाति** एवरूपेन अनत्थकुसलेन कायिकचेतसिकसुखसंखातस्स अत्थस्स चरिया न सुखावहा, न सक्का आवहितुन्ति अत्थो। किं कारणा ? एकन्तेनेव हि हापेति अत्थं दुम्मेधोति बालपुग्गलो अत्थं करिस्सामीति अत्थं हापेत्वा अनत्थमेव करोति। **कपि आरामिको** यथाति यथा आरामे नियुत्तो आरामरक्खणको मक्कटो अत्थं करिस्सामीति अनत्थमेव करोति। एवं यो कोचि अनत्थकुसलो तेन न सक्का अत्थचरियं आवहितुं। सो तञ्ञेव अत्थं हापेति येवाति।

एवं सो पण्डितपुरिसो इमाय गाथाय वानरजेट्ठकं गरहित्वा अत्तनो परिसं आदाय उय्याना निक्खमि। सत्था न भिक्खवे ! एस गामदारको इदानेव आरामदूसको पुब्बेपि आरामदूसको येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि। तदा वानरजेट्ठको आरमदूसकगामदारको अहोसि। पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति।

आरामदूसकजातकं

●

७. वारुणिजातकं

न वे अनत्थकुसलेनाति इदं सत्वा जेतवने विहरन्तो वारुणीदूसकं आरब्भ कथेसि।

पच्चुपन्नवत्थु

अनाथपिण्डिकस्स किर सहायो एको वारुणिवाणिजो तिखिणं वारुणिं योजेत्वा हिरञ्ञसुवण्णादीनि गहेत्वा विक्किणन्तो महाजने सन्निपतिते तात ! त्वं दातब्बमूलं गहेत्वा वारुणिं देहिति अन्तेवासिकं आणापेत्वा सयं नहायितुं अगमासि। अन्तेवासिको महाजनस्स वारुणिं देन्तो मनुस्से अन्तरन्तरा लोणसक्खरं आहरापेत्वा खादन्ते दिस्वा सुरा अलोणिका भविस्सति लोणमेत्थ--

---

वे, निपात मात्र है। **अनत्थकुसले** नाति-अनर्थ-अनायतन में दक्ष, अथवा आयतन-कारण (=प्रयोजन की बात) में अदक्ष। **अत्थरिया ति**-(=उन्नति) वृद्धि-क्रिया। **सुखावहाति**-इस प्रकार के अनर्थ करने में दक्ष (व्यक्ति) से शारीरिक-मानसिक सुख नामक अर्थ की चरिया, सुख-कारक नहीं होती, अर्थ यह कि प्राप्त नहीं की जा सकती। किस कारण ? सर्व प्रकार से ही **हापेति अत्थं दुम्मेधोति**-मूर्ख व्यक्ति, उपकार करूँगा (सोच) उपकार का नाश कर, अपकार ही करता है। **कपि आरामिको यथाति**-आराम (=बाग) में नियुक्त, उपवन-रक्षक के बन्दर उपकार करूँगा (सोच) अपकार ही करते है। इस प्रकार जो अर्थ-कुशल नहीं है, वह भलाई का काम (=अत्थचरिया) नहीं कर सकता; वह निश्चय अपकार ही करता है।

इस प्रकार, उस बुद्धिमान् जन ने, इस गाथा से, वानरों के सरदार की निन्दा की (और) अपनी परिषद् को लेकर उद्यान से निकल आया। शास्ता ने, 'भिक्षुओं ! यह गँवार लड़का न केवल इस समय उद्यान-नाशक हुआ है, पहले भी उद्यान-दूषक ही रहा' (कह) इस धर्मदेशना को, परिणाम दिखा, जातक का तात्पर्य प्रस्तुत किया। उस समव वानरों का सरदार (अब का) आराम-दूषक लड़का था; और बुद्धिमान् आदमी तो मैं ही था।

आरामदूषक जातक

●

४७. वारुणी जातक

'**न वे अनत्थकुसलेनाति**....', यह गाथा शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय, वारुणी-दूषक (मदिरा नष्ट करनेवाले) के विषय में कही।

क. वर्तमान कथा

अनाथपिण्डिक का एक मदिरा-व्यापारी मित्र तेज (तीखी) शराब बनाकर, हिरण्य-स्वर्ण आदि लेकर (मूल्य पर) बेचता था, वह बेचते-बेचते बहुसंख्यक ग्राहक एकत्र हो जाने पर अपने शिष्य को, 'तात ! तू (इनसे) मूल्य ले-लेकर मदिरा दे' कह, स्वयं स्नानार्थ चला गया। शिष्य ने, लोगों को शराब देते हुए-वे बीच-बीच में नमक की डली मँगवाकर, खाते हैं,